शेख़ फ़रीद – सबद १०२
फरीदा दरीआवै कंन्है बगुला बैठा केल करे ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८३

फरीदा दरीआवै कंन्है बगुला बैठा केल करे ॥
केल करेदे हंझ नो अचिंते बाज पए ॥
बाज पए तिसु रब दे केलां विसरीआं ॥
जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआं ॥९९॥

सार: एक विचलित विवेक, उस घर में रहने जैसा है जो किसी ढहती हुई चट्टान के किनारे पर टिका हो जहाँ नीचे की ज़मीन धीरे-धीरे धंस रही हो। सांसारिक आकर्षण उस घर को सुखद बनाते हैं और सुरक्षा का भ्रम पैदा करते हैं। हालाँकि, एक छोटी-सी अनदेखी दरार भी पूरी बनावट को अस्थिर करने के लिए काफ़ी हो सकती है। यह रूपक, उजागर करता है कि इंसान का जीवन इंद्रिय-सुखों की तलाश में कितना अधिक समर्पित रहता है जबकि उसका अस्तित्व स्वयं ही नश्वरता के किनारे पर खड़ा होता है। विघटन, अचानक आ सकता है और नियंत्रण तथा निरंतरता के भ्रम को तोड़ सकता है।

फरीदा दरीआवै कंन्है बगुला बैठा केल करे ॥
फ़रीद कहते हैं कि सारस नदी के किनारे बैठा है, अपनी चंचल क्रीड़ाओं में मग्न। यह एक भटके हुए विवेक का प्रतीक है जो इंद्रिय-सुखों पर केंद्रित है जबकि जीवन नश्वरता की कगार पर डगमगा रहा है।

केल करेदे हंझ नो अचिंते बाज पए ॥
जैसे ही वह खेल रहा होता है, अचानक एक बाज़ उस बेख़बर हंस पर झपट पड़ता है। यह दर्शाता है कि बाधाएँ कितनी अप्रत्याशित रूप से आ सकती हैं और कैसे वह हमारे नियंत्रण और निरंतरता के भ्रम को चकनाचूर कर सकती हैं।

बाज पए तिसु रब दे केलां विसरीआं ॥

बाज़ उन लोगों को अपना शिकार बनाता है जो प्रकृति के सर्वव्यापी नियमों को भूल जाते हैं। यह एक चेतावनी है कि संकट उन्हीं लोगों को घेरता है जो सार्वभौमिक सिद्धांतों के मूल तत्त्व से दूर हो जाते हैं।

जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआं ॥९९॥

जिन घटनाओं की हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी, वह प्रकृति के सार्वभौमिक नियमों के माध्यम से घटित हो गई हैं। यह मानवीय इरादों पर ब्रह्मांडीय इच्छाशक्ति की सर्वोच्चता को दर्शाता है जो हमारी अपेक्षाओं से दूर, कई तरह से प्रकट होती है। (९९)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद एक महत्वपूर्ण सत्य प्रस्तुत करते हैं कि कष्ट अक्सर तब उत्पन्न होता है जब हम सार्वभौमिक सिद्धांतों की अनदेखी करते हैं। जीवन सूक्ष्म रूप से टूट सकता है जिससे स्वयं की सीमाएँ उजागर होती हैं। यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत इच्छाओं से दूर, एक बुद्धि ही ब्रह्मांडीय व्यवस्था का मार्गदर्शन करती है। हमारी योजनाएँ उन कारणों से बाधित हो सकती हैं जिन्हें हम पूरी तरह से समझ नहीं पाते। इसलिए, कष्ट शायद ही कभी आकस्मिक होता है, यह हमारी धारणा पर अहंकार की सीमाओं को उजागर करता है। जबकि हम रणनीतियाँ बनाते हैं, अस्तित्व अपने स्वयं के नियमों के अनुसार ही आगे बढ़ता है। यह अंतर्दृष्टि हमें स्मरण कराती है कि सत्य का विरोध करने से परिणाम अनिवार्य रूप से सामने आ सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com